मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में यथार्थबोध

Deepak Kumar[1]* Dr. Anand Kumar Ray[2]

[1] Research Scholar Department of Hindi, Singhania University, Bari Pacheri, Rajasthan

[2] Research Supervisor, Department of Hindi, Singhania University, Bari Pacheri, Rajasthan

सार* – *मन्नू जी ने अपने कथा-साहित्य में जिन समस्याओं को उठाया है, उनका कोई स्पष्ट हल उन्होंने प्रस्तुत नहीं किया, परन्तु उन समस्याओं पर जिस एकाग्रता से दृष्टि रखकर उन्हें प्रस्तुत किया है, वह वर्तमान जीवन के विभीषिका का निदर्शन करने में पूर्णतः सफल है। इतना निर्विवाद रूप में सत्य है कि मन्नू जी ने जो भी लिखा है, वह उनका देखा-परखा और भोगा हुआ यथार्थ है। इन सबसे ही जीवन का अनुभव प्राप्त करके उन्होंने जिन प्रश्नों का, विसंगतियों और भ्रष्टताओं का चित्रण अपने लेखन द्वारा करने का प्रयास किया है, वे ही उनके साहित्य में प्रस्तुत विभिन्न समस्याएँ है। यथार्थबोध का परिचय मन्नू जी के कथा साहित्य में चित्रित जीवन स्थितियों से भी होता है, जो मुख्यतः स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज और जीवन से संबंधित है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में और जीवन-मूल्यों में जितने भी परिवर्तन हुए हैं, या समाज और राष्ट्र जितने भी परिस्थितियों से गुजरा है, उन सबका आभास मन्नू जी के साहित्य में यत्र-तत्र द्रष्टव्य है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन है, उसके जीवन-दर्शन का बदलाव। हमारे समाज में पहले समधष्टिगत मूल्यों को अधिक महत्त्व प्राप्त था। परन्तु पाश्चात्य जगत के व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन का प्रभाव इस पर भी पड़ने लगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ही जीवन-दर्शन में इस परिवर्तन के आसार सीखने लगे थे, परन्तु स्वतन्त्रता के बाद तो यह दर्शन शीघ्रता से जन मानस में फैलने लगा।

कीवर्ड* – *मन्नू भण्डारी, कथा-साहित्य, थार्थबोध, हिन्दी साहित्य।

---------------------------------x---------------------------------

परिचय

स्वतंत्र हिन्दी साहित्य में अनेक नई महिला लेखिकाएँ उभरीं और उन्होंने पाठकों और आलोचकों का ध्यान आकर्षित किया लेकिन शुरुआती चमक के बाद उनमें से कुछ ने अपने सफल करियर का लेखन नहीं किया। साहित्यिक लेखन के क्षेत्र में अनेक महिला लेखकों ने प्रवेश किया है। कई उच्च प्रतिभाशाली लेखकों ने अपने रचनात्मक लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, दीप्ति खंडेलवाल, मृडीला गर्ग, मन्नू भंडारी, शुभा वर्मा कुछ सबसे कुशल समकालीन हिंदी महिला लेखिका हैं। उनके लेखन से पता चलता है कि कैसे आधुनिकता, समकालीन सामाजिक परिस्थितियों और जीवन में धाराओं और क्रॉस धाराओं ने उनके लेखन और विषय वस्तु के साथ-साथ उन पर प्रभाव डाला है। इसके अलावा इन महिला लेखकों ने समकालीन भारत की पृष्ठभूमि के खिलाफ भारतीय महिलाओं, उनके दर्द, संघर्ष, दुर्दशा के बारे में लिखा है।[1] उन्होंने न केवल बाहरी स्थिति और संघर्ष पर बल्कि आधुनिक महिलाओं की आंतरिक उथल-पुथल पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया है। इस संदर्भ में मन्नू भंडारी जैसे लेखक विशेष ध्यान देने योग्य हैं। कथा की दुनिया में उनका योगदान तक है।

भंडारी की कृतियों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास आपका बंटी का गुजराती, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। निरंजन सत्तावाला ने गुजराती में अनुवाद किया है। मराठी में इंदुमती शेवाडे ने अनुवाद किया है जबकि जय रतन ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। चाहे वह लघु कथाएँ या उपन्यास या नाटक लिखती हों, भंडारी मुख्य रूप से 'रोजमर्रा के भारत' के बारे में लिखती हैं। जिस समाज में हम सांस लेते हैं, जिस संस्कृति से हम संबंध रखते हैं। उसकी प्रमुख चिंताएँ हमारे अपने परिवेश से, हमारी तात्कालिक दुनिया से, हमारे अपने जीवन में दर्पण धारण करने से उत्पन्न होती हैं। वह भारत को सरल नहीं बनाती बल्कि भारत को अपने पाठक के सामने उसी रूप में प्रस्तुत करती है।[2]

www.ignited.in

हिंदी साहित्य जगत में उनका एक मात्र योगदान निम्नलिखित हैं।[3]

उपन्यासः

- एक इंच मुस्कान (1961)
- आप का बंटी (1971)
- महाभोज (1979)
- स्वामी (1982)
- कथा पटकथा (2003)

खेलः

- महाभोज (1983)
- बीना दिवारों का घर (1965)
- प्रतिशोध तथा अन्या एकांकी (1987)

भंडारी की कृतियों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास आपका बंटी का गुजराती, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। निरंजन सत्तावाला ने गुजराती में अनुवाद किया है। मराठी में इंदुमती शेवाडे ने अनुवाद किया है जबकि जय रतन ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। चाहे वह लघु कथाएँ या उपन्यास या नाटक लिखती हों, भंडारी मुख्य रूप से 'रोजमर्रा के भारत' के बारे में लिखती हैं। जिस समाज में हम सांस लेते हैं, जिस संस्कृति से हम संबंध रखते हैं। उसकी प्रमुख चिंताएँ हमारे अपने परिवेश से, हमारी तात्कालिक दुनिया से, हमारे अपने जीवन में दर्पण धारण करने से उत्पन्न होती हैं।[4]

जीवन और कार्य

स्वतंत्र हिन्दी साहित्य में अनेक नई महिला लेखिकाएँ उभरीं और उन्होंने पाठकों और आलोचकों का ध्यान आकर्षित किया लेकिन शुरुआती चमक के बाद उनमें से कुछ ने अपने सफल करियर का लेखन नहीं किया। साहित्यिक लेखन के क्षेत्र में अनेक महिला लेखकों ने प्रवेश किया है। कई उच्च प्रतिभाशाली लेखकों ने अपने रचनात्मक लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, दीप्ति खंडेलवाल, मृडीला गर्ग, मन्नू भंडारी, शुभा वर्मा कुछ सबसे कुशल समकालीन हिंदी महिला लेखिका हैं। उनके लेखन से पता चलता है कि कैसे आधुनिकता, समकालीन सामाजिक परिस्थितियों और जीवन में धाराओं और क्रॉस धाराओं ने उनके लेखन और विषय वस्तु के साथ-साथ उन पर प्रभाव डाला है। इसके अलावा इन महिला लेखकों ने समकालीन भारत की पृष्ठभूमि के खिलाफ भारतीय महिलाओं, उनके दर्द, संघर्ष, दुर्दशा के बारे में लिखा है। उन्होंने न केवल बाहरी स्थिति और संघर्ष पर बल्कि आधुनिक महिलाओं की आंतरिक उथल-पुथल पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया है। इस संदर्भ में मन्नू भंडारी जैसे लेखक विशेष ध्यान देने योग्य हैं। कथा की दुनिया में उनका योगदान 6वे तक है। उन्होंने लघुकथा उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास, बच्चों के लिए साहित्य, नाटक, स्क्रीन प्ले और फिल्म के लिए संवाद आदि साहित्य की विभिन्न शैलियों में लिखा और प्रयोग किया है।[5]

कार्य क्षेत्र

श्रीमती मन्नू को साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया गया हैं। उनका साहित्य लोक प्रियता के साथ अपनी उत्कृष्टता भी स्थापित कर चुका हैं। उनकी कई रचनाएँ पुरस्कृत हो चुकी हैं। उन्हें रचनाओं के उपलक्ष्य में निम्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं - भारतीय भाषा परिषद् कि ओर से साहित्यिक पुरस्कार दिया जाता हैं। सन 1976 - 1980 में प्रकाशित हिन्दी भाषा में सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति महाभोज के लिए राम कुमार भुवालकर पुरस्कार प्राप्त हुआ हैं। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा महाभोज उपन्यास को पुरस्कृत किया गया है। पुरस्कार राशि 6,000 रू हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय कौ ओर से 1980-81 के अन्तर्गत अहिन्दी भाषी- क्षेत्र की हिन्दी लेखिका के रूप में श्रीमती मन्नू भंडारी सम्मानित की गयी हैं।[6]

यथार्थ

यथार्थ जीवन की सच्ची अनुभूति है। जिसमें हम अपने जीवन में घटित होने वाले राग-विराग, सुख-दुख और अन्य भावनाओं का अनुभव करते हैं। अपनी इन्द्रियों के द्वारा समाज में होने वाली सभी प्रकार के क्रिया-कलापों का अनुभव करना ही यथार्थ है। इस यथार्थ अनुभूति के कारण लेखक अपने अनुभव करते हैं। समाज में घटित होने वाली घटनाओं की अनुभूति के साथ स्वयं को "मधुमती भूमिका में ढालकर उसका आंकलन, विवेचन और वर्णन करना ही यथार्थ है। यथार्थ की अनुभूति के कारण ही हर लेखक का अपना-अपना अनुभव ज्ञान और दृष्टिकोण होता है। इन सभी अनुभवों, ज्ञान और दृष्टिकोणों को वह सैद्वांतिक विचारधारा पर कसता है। साहित्य में वास्तविकता के रूप में अभिव्यक्त स्वरूप ही यथार्थ है। साहित्य की किसी भी विद्या के क्षेत्र में यथार्थ का चित्रण और यथार्थ को निरूपित किए जाने के प्रति रचनाकार सदा सचेत रहता है। यथार्थ वह है जो भौतिक पदार्थों का वास्तविक रूप

दिखाता है। यर्थाथ क्या है? इसके बारे में अनेक दिद्वानों ने अपने मत व्यक्त किये हैं। यथार्थ का कोशंगत अर्थ सत्य, प्रकृत, उचित आदि है। इसे जैसा-का तैसा, विभिन्न कल्पनाओं का यथार्थ आधार हो सकता है, मगर साथ ही निराधार कल्पना भी होती है।

वस्तुतः यर्थाथ का चित्रण साहित्य में दो रूपों में किया जाता है एक स्थूल रूप में जिसके अन्तर्गत वास्तविकता के बाहय पक्ष का चित्रण किया जाता है और दूसरा सूक्ष्म जिसमें यथार्थ के आन्तरिक पक्ष का चित्रण किया जाता है। स्थूल चित्रण में अधिकतर रचनाकार यथातथ्य का ज्यों का त्यों या फोटोग्राफिक चित्रण करने की होड़ में लगे रहते हैं। इस प्रकार के चित्रण में समाज के नग्न कुरूप, कुत्सित रूप का वर्णन अधिक होता है। इस प्रकार बाहय यथार्थ का चित्रण करने वाले रचनाकार समाज के एक पक्ष को ही उभारते है जिससे ऐसे साहित्य को पढ़ने वाले पाठक में समाज के प्रति घृणा और भय की भावना उत्पन्न होती है। वास्तव में यथार्थवादी लेखक को समाज के दोनों पक्षों, अच्छे और बुरे का चित्रण करना चाहिए।

यथार्थ का दूसरा रूप सूक्ष्म यथार्थ है। यह लेखक की समझ पर आधारित रहता है। इसमें मात्र यथातथ्य का फोटोग्राफिक चित्रण करना नहीं होता बल्कि पात्रों और परस्थितियों को समकालीन युगीन परिवेश के अनुकूल निर्माण करना पड़ता है। इसके लिए रचनाकार में अनुभव, ज्ञान और दृष्टिकोण के व्यापक स्तर पर आवश्यकता होती है। क्योंकि यह केवल वर्तमान स्थिति या परिवेश पर आधारित नहीं रहता बल्कि पीछे अतीत तथा आगे भविष्य भी उसे प्रभावित करने वाले होते हैं। अतः रचनाकार को यथार्थ का चित्रण करते समय अपने परिवेश का गहन अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। यथार्थ साहित्य की आत्मा होती है और यथार्थवादी उसका शरीर।

अज्ञेय के अनुसार यथार्थ का साहित्य में अर्थ है - जो अर्थ है, उसको प्रस्तुत करना अथवा जो यथा स्थिति है, उसकी अर्थवान प्रस्तुति। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से जगत् के और जगत की वस्तुओं को जाना जाता है। उनसे परिचित हुआ जाता है। जगत ज्ञेय है और ज्ञाता मनुष्य अपनी इन्द्रियों की सहायता से दुनिया और उसकी वस्तुओं का सीधा ज्ञान प्राप्त करता है। हम अपनी आँख, कान और नाक, मुँह, जीभ त्वचा आदि ज्ञानेद्रियों के माध्यम से दुनिया की वस्तुओं के सम्पर्क में आते हैं। उन वस्तुओं की छाप हमेशा हमारे मन पर पड़ती है। मनुष्य की चेतना पर बाहय जगत की वस्तुओं का जो प्रभाव पड़ता है वह उस मन पर अंकित होता है। एक तरह से मन संसार के व्यापारों का अद्भुत कोषागार है, जिसमें चेतना ने बाहय जगत की अनंत तस्वीरें इकट्ठी कर रखी है। हमारे मन का निर्माण बाहय जगत से हमारी चेतना के सम्पर्क का फल है। हमारा मन बाहय जगत के निरपेक्ष नहीं रह सकता है। बाहय जगत अगर न हो तो मानव छोड़ा हुआ रास्ता (अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियाँ-3) मन की सत्ता भी न रहे। हमारी चेतना बाहय वस्तुओं को सम्पर्क में आती है तब हमारा मन उसे ही कई रूपों में अभिव्यक्ति करता है। साहित्य उस अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। जगत और जगत की वस्तुओं के प्रत्यक्ष ज्ञान को यथार्थ कहते हैं। यथार्थ का सीधा मतलब होता है, जैसा है। यानी की दुनिया जैसी है, उसका उसी प्रकार का ज्ञान यथार्थ है।[7]

लघुकथा लेखक के रूप में

अधिकांश आलोचकों द्वारा मन्नू भंडारी को स्वतंत्र हिंदी साहित्य में प्रख्यात महिला लेखक माना जाता है। उन्हें नई कहानी आंदोलन की लघु कथाकार भी माना जाता था। अधिकांश महिला लेखकों ने अनुभवों की प्रामाणिकता के नाम पर अपनी यौन जटिलताओं को व्यक्त किया। डॉ. परेश इन कहानियों को 'दिन सपने देखने वाला घोड़ा' मानते हैं। मन्नू भंडारी की लघुकथाओं में भी अनुभवों की प्रामाणिकता है लेकिन यह व्यक्तिगत सीमित नहीं है बल्कि इसे समय और संवेदनशीलता की प्रामाणिकता से रंगा गया है। अजीत कुमार के साथ बातचीत करते हुए वह अपनी रचनात्मक प्रक्रिया को स्पष्ट करती हैः

कभी-कभी कुछ शानदार विचार लिखने के लिए उत्साहित होते हैं लेकिन मेरे लिए इसे एक छोटी कहानी में तब तक आकार देना संभव नहीं है जब तक कि यह पूरी तरह से जीवन से बुन न जाए। जीवन की धड़कनों से भरी परिस्थितियाँ, विचार या समस्याएँ मुझे लिखने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।[8]

कथा-साहित्य में यथार्थबोध

जीवन की सच्ची अनुभूति यथार्थ है और इसका कलात्मक अभिव्यक्ति कारण यथार्थवाद है। यथार्थवाद की सृष्टि निराशावादी बनाने के लिए नहीं होती बल्कि इसकी सृष्टि आशा को दृढ़तर बनाने के लिए की जाती है। यथार्थ वह है जो साहित्य में समाज के वास्तविक चित्रण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यथार्थवाद वह है जो साहित्य के किसी भी विद्या के क्षेत्र में यथार्थ चित्रण पर बल देता है और उसके प्रति निरंतर आग्रहशील रहता है। इसलिए यथार्थवादी साहित्यकार अपनी रचनाओं में मानव-समाज और मानव-जीवन का जो चित्रण प्रस्तुत करता है, उसका आधार भावना या कल्पना का जगत न होकर भौतिकवादी जगत होता है। वह साहित्य को केवल

मानसिक परितृप्ति और भावात्मक अनुभूति का विषय न मानकर जीवन और समाज के विकास के लिए एक सशक्त माध्यम मानता है। यथार्थवाद, साहित्य का बाहूय आवरण है तो यथार्थ उसका प्राण।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रायः सभी विद्‌याओं के अन्तर्गत यथार्थवाद का प्रारंभ और विकास आधुनिक युग में ही हुआ। भारतेन्दु युग में जिन साहित्यिक विधाओं का आधुनिक रूप में विकास हुआ है, वे क्रमशः यथार्थ की ओर उन्मुख प्रतीत होते हैं। यूरोप की भांति हिन्दी साहित्य में इसका आरंभ एक विचारान्दोलन के रूप में नहीं हुआ। इसके विपरीत पाश्चात्य सभ्यता और साहित्य के प्रभाव के बढ़ने के साथ हिन्दी के साहित्यकारों ने यूरोपीय भाषाओं में सुविकसित यथार्थवादी आन्दोलन से प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया।

प्रस्तावित शोध का प्रतिपाद्‌य है, मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में यथार्थबोध कथा साहित्य अर्थात कहानी और उपन्यास। यथार्थ से प्रमुखतः प्रतिबद्ध माने गये हैं। वस्तुतरू कहानी और उपन्यास की संरचना ही ऐसी होती है कि उनमें देश काल, पात्र और घटना के माध्यम से यथार्थ का प्रकटीकरण अनिवार्य हो जाता है। आधुनिक कथा-साहित्य में यथार्थ का प्रस्तुतीकरण एक सहज प्रक्रिया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक युग के सजग और संवेदनशील कथाकार होने के नाते मन्नू भंडारीके कथा साहित्य में व्यंजित और कथा साहित्य के विधायक तत्व के रूप में यथार्थ बोध का विवेचन और विश्लेषण, शोध और आलोचना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है।

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में थार्थवादी का प्रस्तुतीकरण, जीवन स्थितियों और समस्याओं के रूप में हुआ जिसे पात्रों, घटनाओं और कथा-रचना के अन्य उपादानों और जीवन्त और विश्वसनीय बनाया गया है।[9]

मन्नू भंडारी के साहित्य में पारिवारिकय थार्थ बोध

महापंडित राहुल सांस्कृत्यासन की मान्यता है कि मानव-समाज का विकास तीन चरणों में हुआ है जंगली, बर्बर और सभ्य। उन्होंने एंगेल्स का हवाला देते हुए लिखा है कि इन तीनों चरणों में मनुष्य के इतिहास का सबसे बड़ा भाग जंगली मानव-समाज का इतिहास है। तब मनुष्य के पास साधनों की कमी थी और उसे अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, व्यक्ति से अधिक समाज पर भरोसा रखना पड़ता था। इसलिए उसकी जो कुछ भी थोड़ी बहुत सम्पत्ति थी, वह सामूहिक थी। सभी मिलकर एक-दूसरे की रक्षा करते थे, साथ मिलकर भोजन संग्रह करते थे और एक साथ उसका उपभोग होता था। आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन वैयक्तिक न होकर सामूहिक था। अतः सम्पत्ति का होना जरूरी था। किन्तु इस आदिम साम्यवादी समाज के अन्तिम चरण में स्थितियों में परिवर्तन होने लगा। सम्पत्ति के मामले में समाज में असमानता व्याप्त होने लगी।

सामंती समाज में सामाजिक संस्थाओं में परिवार का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण सामाजिक संस्थाओं में परिवार ही वह मूलभूत सामाजिक व्यवस्था है, यही वह कड़ी है जो व्यक्ति का सम्बन्ध समाज से जोड़ता है। व्यक्ति को सामाजिक बनाने में इस परिवार का स्वरूप प्रायः संयुक्त हुआ करता था। संयुक्त परिवार वह है जहाँ रक्त सम्बन्ध से कुछ जुड़े परिवार सम्मिलित रूप से रहते हों तथा खान-पान और आर्थिक हितों की दृष्टि से वे सम्मिलित रूप से व्यवहार करते हो।[10]

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में सामाजिकय थार्थ बोध

मारिट हार्कनेस को लिखे गये एक पन्ने में एंगेल्स ने लिखा था कि मेरी राय में, यथार्थवाद का अर्थ तफसील सच्चाई का आम परिस्थितियों में आम चरिन्नों का सच्चाई भरा पुनर्सजन है। अपने इसी पन्नेच में एंगेल ने लिखा था कि लेखक के विचार जितने छुपे रहते हैं, कला की कृति उतनी ही अच्छी होती है। मैं जिस यथार्थवाद की बात कर रहा हूँ वह लेखक के दृष्टिकोण के बावजूद उभर सकता है। जाहिर है कि एंगेल्स बुनियादी तौर पर एक राजनीतिक विचारक तथा दार्शनिक थे। अर्थशास्त्र में मार्कस एंगेल्स की गहरी रूचि सर्वविदित है। बावजूद इसके एंगेल्स ने स्वीकार किया है कि फ्रांसीसी उपन्यासकार बाल्जाक की रचनाओं के माध्यम से उन्हें फ्रांसीसी समाज का जितना ज्ञान मिला उतना इतिहासकारों, अर्थशास्त्रीयों तथा सांख्यिकीविदों की पुस्तकों से नहीं मिल पाया। एंगेल्स के शब्दों में बाल्जाक ने फ्रांसीसी समाज का पूरा इतिहास समेटा है, जिससे मुझे आर्थिक तफसीलों तक के मामले में (उदाहरण के लिए क्रान्ति के बाद चल तथा अचंल सम्पत्ति को पुनर्वयवस्था के बारे में) इस अवधि के सारे विशेषज्ञों-इतिहासकारों, अर्थशास्त्रियों तथा सांख्यिकीविदों की पुस्तकों से कहीं अधिक जानकारी मिली। एंगोल्स के उपर्युक्त पत्र की चर्चा का मकसद यह बताना है कि “उपन्यास का अपने समय-समाज से गहरा रिश्ता होता है।” रैल्फ फाक्स के अनुसार “उपन्यास हमारे आधुनिक, बुर्जुवा समाज का महाकाव्य है।” कला के इस रूप में अपना पूर्णतम विकास इस समाज की यौवनावस्था में प्राप्त किया, और ऐसा लगता है कि हमारे समाज में बुर्जज साहित्य को न केवल सबसे प्रतिनिधि उपज है, बल्कि उसकी श्रेष्ठतम रचना भी है। यह कला का एक नया रूप है।[11]

धार्मिक यथार्थ बोध

मन्नू भंडारी के साहित्य की गहराई से समीक्षा करें तो यह बात खुलकर उभर कर आती है। जब भी धर्म के साथ अधर्म, सत्य के स्थान पर असत्य, अच्छाई की जगह बुराई, दया के स्थान पर निष्ठुरता ने जब भी अपना स्थान बनाया। वहीं धर्म का नाश होता चला गया। साहित्य के पन्नों् को उधेड़कर देखें तो यह बात साफ हो जाती है। पाप बढ़ रहा है। इसकी कोई सीमा नहीं है। जब-जब अच्छाई पर बुराई की विजय हुई है। अधर्म, पाप, का बोलबाला रहा है। यही नहीं पुराणों-ग्रंथों से सीखा जा सकता है। साहित्य में भी वहीं लिखा गया है। इस दुनियां में जब भी धर्म के नाम पर ढ़ोंग, दिखावा किया गया। मानवता का हनन होता रहा है। ये सभी कर्मों पर आधारित है। अच्छे कर्म का परिणाम भी अच्छा ही रहा। बुरे कर्मों का परिणाम, बुराई को लेकर आया।

सबसे पहले मनुष्य की मनुष्यता खो गयी है। इस धर्म की रक्षा करने वाला भी मनुष्य ही है और इसे मिटाने वाला भी यही है। धर्म ग्रंथों में बार-बार इसकी दुहाई दी जाती है। धर्म की रक्षा करो। मन्नू भंडारी के साहित्य में कहीं-कहीं पर धर्म के अनुशरण की बात दोहराई या कही गयी है। जहाँ पर मनुष्य की मानवता का नाश होते दिखाई देता है। वहाँ धर्म ही आड़े आते हैं। जैसे की दुर्बल, गरीब, असहाय, स्त्री जाति, जीव-जन्तुओं पर बल का प्रयोग किया जाता है। वहीं मानवता का हनन निश्चित हो जाता है।[12]

राजनैतिक यथार्थ बोध

यदि देखा जाए तो हमारा देश आज भी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। अन्तर केवल इतना है कि स्वतन्त्रता से पहले वह अंग्रेजों का गुलाम था और अब वह राजनीतिज्ञों की मुट्ठी में कैद है। स्वतन्त्रता से पहले गांधी और नेहरू ने देश की एकता और उन्नति के जो सपने संजोए थे, वह वर्तमान में धाराशायी हो गए हैं। आज स्थिति यह है कि राजनीतिज्ञ पदलोलुपता और स्वार्थ भावना में इस कदर अंधा हो गया।

है कि वह मात्र अपनी स्वार्थपूर्ति और ऐशो-आराम के विषय में ही सोचता है, सामान्य जनता की उसे परवाह ही नहीं। सरकार द्वारा जो भी योजनाएं चलाई जाती है, उसका लाभ केवल कुछ वर्गों तक ही सीमित होकर रह जाता है, आम जनता उस लाभ से वंचित रह जाती है। जिसका परिणाम यह हुआ कि जनता का राजनीति से मोहभंग और मानवीय मूल्यों के प्रति अविश्वास की भावना उत्पन्न हो गयी। “स्वतन्त्रता से पूर्व राजनीति के क्षेत्र में जो स्वच्छ, पवित्र, सेवा भावना से परिपूर्ण वातावरण था, वह स्वतन्त्रता मिलते ही दूषित हो गया था। राजनेता अपने कर्तव्यों को वोटो की प्राप्ति तक ही सीमित मानने लगे थे। सत्याग्रह आन्दोलन और देश प्रेम के नारे लगाने वाले नेताओं ने देश की जनता का शोषण आरंभ कर दिया तो दूसरी और जनता के मध्य कलह और फूट के बीज बोने वाले भी हुए।

राजनीति के इस कुत्सितय थार्थ को मन्नू भंडारीने अपने कथा साहित्य में समाहित किया है। मन्नू जी की कहानी मैं हार गई वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है। इस कहानी के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया है कि आज इस भ्रष्ट परिवेश में हम आदर्श समाजसेवी, देश-प्रेमी नेता का निर्माण तो दूर उसकी कल्पना में भी सफल नहीं हो पाते।

मन्नू भंडारी ने महाभोज उपन्यास की रचना कर यह साबित कर दिया कि अब महिला लेखिकाएँ केवल स्त्री-जीवन तक ही सीमित नहीं है बल्कि राजनीति जैसे विस्तृत क्षेत्र में भी अपनी लेखनी चलाकर उत्कृष्ट सृजन कर रही है। अतरू उनके लेखन पर सिर्फ स्त्रीवाद या महिला लेखन का चस्पा लगाना संगत न होगा। यह उपन्यास तत्कालीन राजनीति का कच्चा चिड्ढा खोलकर रख देता है, जो कि वर्तमान संदर्भ में पूर्णतः यथार्थ और कहीं ज्यादा वीभत्स रूप में नजर आ रहा है। राजनीति के क्षेत्र में पद और धन लोलुपता के कारण व्याप्त भ्रष्टाचार को एक महिला लेखिका ने जिस सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया है, अन्यत्र वह दुर्लभ है। मन्नू जी की प्रशंसा करते हुए कमल कुमार लिखते हैं - “मन्नू भंडारी का महाभोज राजनीतिक उपन्यास है।

आर्थिक यथार्थ बोध

घर-परिवार का मापदण्ड इसी से पूरा होता है। अर्थ व्यवस्था यदि डगमगा जाये तो यह निश्चित है, जीवन की धूरी डुलाये मान हो जाये। बार-बार यही सवाल घूम-घूमकर क्यों आता है। वह इसलिए इसे सृष्टि की धूरी माना गया है। कोई भी कार्य इसके अभाव में पूर्ण नहीं होता है। यह भी जीवन का सच है। आर्थिक तंगी जीवन-लीला को समाप्त कर सकता है। सृष्टि का प्रत्येक निर्माण कार्य इसी के बलबूते पर होता है। मन्नू भंडारीके साहित्य में अभाव को विस्तार से परिकृत अथवा उल्लेखित किया है।

गरीब के जीवन में अर्थ का विशेष महत्त्व होता है। जब किसी के जीवन में किसी वस्तु या रूपया, धन-दौलत की कमी महसूस होती है। वह उसी के पीछे दौड़ पड़ता है। इनके साहित्य में जितने भी पात्र हैं अधिकाशतः अधिकतर असहाय गरीब ही है। इसके विषय में अधिक जानना है तो बीते युगों के समयकाल

एवं साहित्य के पन्नों में झाँक कर देखा जा सकता है। सत्यता अपने आप प्रस्तुत हो जायेगी।

सांस्कृतिक यथार्थ बोध

इंसान की पहचान भी संस्कृति के बलबूते पर हुई है। मनुष्य जीवन का अभिन्न हिस्सा है। संस्कृति का पतन मनुष्य जाति के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। गरीब-अमीर सभी के लिए यह पक्ष महत्वपूर्ण है। पशुओं के लिए कुछ भी नहीं। इसमें, रीतिरिवाज, परम्पराएं, तीज-त्यौहार इत्यादि सभी आ जाते हैं। हमारी वेश-भूषा भी प्रमुख है। जब इन सभी तत्वों को एक सूत्र में पिरोया जाता है तब कहीं चलकर सांस्कृतिक यथार्थ का बोध होता है।

प्रत्येक साहित्य में इस पक्ष को प्रमुखता से प्रधानता दी जाती है। मन्नू भंडारी के साहित्य में यह पक्ष उभरकर आया है। इसीलिए इनकी रचनाएं इतनी लोकप्रिय एवं प्रसिद्धि प्राप्त है। इन्होने हमेशा सत्य घटनाक्रम को प्रस्तुत किया है।[13]

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी जी के कथन से, "मैं यथार्थ के धरातल पर कहानियाँ लिखती थी और सपनों की दुनिया में जीती थी।" आदमी के जीवन-क्रम का यही यथार्थ हो जैसा जीवन जैसे दुःस्वप्न हो गया हो आज"विचारों और संस्कारों के इन्द्र के बीच अधर में लटकी "त्रिशंकु की माँ हो या मातृत्व और स्त्रीत्व के एन्द्र के त्रास को झेलती "आपका बंटी" की शकुन। आदर्श और यथार्थ, स्वप्न और वास्तविकता के बीच टूटती-चरमराती "क्षय" की कुंती हो सभी में प्रकारान्तर से मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व झांकता है। क्षण-क्षण बहलते हुए यथार्थ का व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व के क्षरण-पोषण का आधार है मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य अलगाववाद की विडम्बनापूर्ण यातना झेल रही मन्नू भंडारी ने स्वयं "एक कहानी यह भी" में अपने जीवन और अपने कथा-साहित्य को क्रमवार सजाया है। और बताया है कि, "असली मान तो होता है रचनाकार का दायित्व बोध, उसके सरोकार, उसकी जीवन-दृष्टि और उसकी कलात्मक निपुणता।"

संदर्भ

1. जोशी, पीजी मन्नू भंडारी फिक्शनः ए स्टडी इन वूमेन एम्पावरमेंट एंड पोस्टकोलोनियल डिस्कोर्स। नई दिल्लीः प्रेस्टीज; 2003. पी.नं.178।

2. कृपाल, विनय। द पोस्ट मॉडर्न इंडियन इंग्लिश नॉवेलः इंट्रोगेटिंग द 1980 एंड 1990' ज. बॉम्बेः एलाइड पब्लिशर्स, 1996, पी. नंबर 148।

3. श्री, डॉ. एस. प्रसन्ना। मन्नू भंडारी के उपन्यासों में महिलाएं ए स्टडी, सरूप एंड संस, नई दिल्ली-2003 पी. नं। तेरहवें- XIV

4. मन्नू भंडारी। राइटिंग फ्रॉम द मार्जिन एंड अदर एसेजः पर्दा इन द सब कॉन्टिनेंटल नॉवेल इन इंग्लिश। नई दिल्लीः वाइकिंग, 2005. पी. नं. 32-38.

5. भंडारी मन्नू, संपूर्ण कहानी की प्रस्तावना, नई दिल्लीः राधा कृष्ण प्रकाशन, 2010, पी. नं। XVII।

6. मन्नू भंडारी, एक उपन्यास भारतीय महिला उपन्यासकारों का लेखन, एड आरके धवन, नई दिल्ली, प्रेस्टीज बुक्स 1991।

7. मन्नू भंडारी। मार्जिन और अन्य निबंधों से लेखन। नई दिल्लीः पेंगुइन, 2003।

8. इंदिरा मोहन टीएमजे (एड) मन्नू भंडारी- ए क्रिटिकल स्पेक्ट्रम, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2004।

9. जोशी. पी.जी. मन्नू भंडारी का फिक्शन स्टडी इन वूमेन एम्पावरमेंट एंड पोस्टकोलोनियल डिस्कोरस, प्रेस्टीज बुक्स, नई दिल्ली-2003।

10. मेहता कमल, एड. द ट्वेंटिएथ सेंचुरीः इंडियन शॉर्ट स्टोरी इन इंग्लिश, क्रिएटिव बुक्स, नई दिल्ली, 2004

11. सिंह अवधेश कुमार, एड. बाय, डिस्कोर्स ऑफ रेजिस्टेंस इन द कोलोनियल पीरियड, क्रिएटिव बुक्स, नई दिल्ली, 2005

12. भारद्वाज, हिंदी कथा साहित्य का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुरः नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2005।

13. कप्पिकरे डॉ. मंगल, सथोतारी हिंदी लेखिकाओ की कहानियों में नारी, कानपुरः विकास प्रकाशन, 2002।

Corresponding Author

Deepak Kumar*

Research Scholar Department of Hindi, Singhania University, Bari Pacheri, Rajasthan